मुसलमानों
की
वर्तमान समस्यायें
और उनका हल

मौलाना इनायत उल्लाह सुब्हानी

अनुवादक–

डॉ. रफ़ीक़ अहमद

मिल्लते इस्लामियां को आज कितनी समस्याओं का सामना है, शायद कोई भी समझदार मुसलमान इन समस्याओं से बेखबर नहीं होगा। आज दो, चार, छै, आठ, दस समस्यायें नहीं समस्याओं का भण्डार बल्कि समस्याओं की एक फौज है, जो हर तरफ़ से मिल्लत पर हमलावर है। आज मिल्लते इस्लामिया सर से पैर तक ज़ख्मों से चूर है। मिल्लत रूपी शरीर का कोई अंग ऐसा नहीं है जहां से खून न रिस रहा हो।

यह मसला केवल हिन्दुस्तानी मुसलमानों के साथ खास नहीं है, दुनिया के जिस कोने में चले जाइये, मिल्लते इस्लामिया मज़लूम और परेशान हाल ही मिलेगी। वह हर जगह समस्याओं से ग्रस्त और समस्याओं की बोझ से दबी और सिसकती नज़र आयेगी।

प्रश्न यह है कि मिल्लत की यह हालत क्यों हो गयी? वह मिल्लत जिसे कभी उसके रब और पालनहार ने इ़ज़्ज़त और सरबुलन्दी के सिहांसन प्रदान किये थे और दूसरी क़ौमों और जातियों की नेतृत्व एवं अगुवई के लिये उसका चयन किया था, वह आज बदहाली की इस इन्तिहा को क्यों पहुंच गयी ?

इस प्रश्न का उत्तर विभिन्न प्रकार से दिया जा सकता है–

कोई तो कहता है कि मिल्लत की यह दुर्दशा तालीम

के मैदान में पीछे रह जाने का नतीजा है। इस मिल्लत की तरक़्क़ी और विकास का मात्र अकेला रास्ता यह है कि वह तालीम के मैदान में आगे बढ़ें। वह अपने नौजवानों में आधुनिक शिक्षा के लिये प्रोत्साहित करे। और इस शिक्षा के लिये जो संसाधनों की आवश्यकता हो, उन संसाधनों की उपलब्धता के लिये भरपूर संघर्ष करें।

मगर सवाल यह है कि संसाधन आयें कहां से ?

हुकूमत और सत्ता चाहे अपनों की हो, या दूसरों की, वह क़ौम के सपूतों को शिक्षा से बहुत दूर रखना चाहती है। वह कभी नहीं चाहती कि मिल्लत के अन्दर कोई जागृति आये, क्यों कि मिल्लत की जागृति शासक वर्ग को कभी पसन्द नहीं आती। मिल्लत का जो धनी वर्ग है उससे भी इस मामले में किसी गैर मामूली मदद की उम्मीद नहीं की जा सकती है। धनी वर्ग आमतौर से शिक्षा से बेपरवाह और शिक्षा जगत से दूर होता हैं वह बेचारा क्या जाने कि शिक्षा क्या चीज़ है? उसके क्या फायदे है? लिहाजा वह क्यों किसी इस्लामी स्कूल की स्थापना या किसी इस्लामी यूनिवर्सिटी के क़ियाम की ज़िम्मेदारी अपने सर लेकर अपने सुकून को बेमज़ा करे।

एक दूसरा ख़्याल यह है कि मुसलमानों की बदहाली नतीजा है आपस के भेदभाव और विवाद का। इस बदहाली का इलाज यह है कि मिल्लत आपस के भेदभाव को भुलाकर

एक बदन का रूप धारण कर लें। ओलमा आपस के भेदभाव को भूल जायें। एक दूसरे के लिये अपने सीने खोल लें।

सियासी लीडर व्यक्तिगत मस्लहतों से ऊपर उठकर या व्यक्तिगत शत्रुता को भुलाकर सभी के फ़ायदों के ख़ातिर एक प्लेटफार्म पर इकट्ठे हो जायें। इसी तरह मिल्लत के सभी गिरोह या सारे फ़िरक़े एक दूसरे से टकराने के बजाये एक दूसरे की भलाई का तरीका अपनायें।

ख्वाब तो यह बहुत ही अच्छा है, मगर यह ख़ूबसूरत ख़्वाब पूरा कैसे होगा? वह ओल्मा जो ख़ुदा के ख़ौफ़ से दूर और माल व दौलत की मुहब्बत में गिरफ्तार होते हैं, जो लोग मिल्लत के अन्दर इख्तेलाफ़ात के बीज बोते और इसके सिले में डालर्स की गद्दियों और मन्त्रालयों या अध्यक्षता की कुर्सियों पर आसीन होते हैं, वह बेचारे क्या जानें कि मिल्लत की बदहाली क्या बला होती है।

वह सियासी लीडर जो झूठ के पुल बांध कर और अपने विरोधियों के खिलाफ़ भावनायें भड़काकर क़ौम का समर्थन प्राप्त करने में कामयाब हो जाते हैं और फिर अगर मिल्लत बदहाली का शिकार होती है और ज़िन्दगी की बुनियादी ज़रूरतों से भी वंचित रहती है। और जब तक सियासी लीडर और तख्त नशीन ओलमा आपस में मुत्तहिद नहीं होते मुल्क के अलग-अलग गिरोहों और

फ़िरकों के आपस में मुत्तेहिद होने का तसव्वुर एक ख्वाब से ज़्यादा हैसीयत नहीं रखता।

एक तीसरा ख्याल यह है कि आज मिल्लत का सबसे संगीन मसला एक समझदार दूर अंदेश और निःस्वार्थ नेतृत्व का विलोप है। इस क़ियादत और नेतृत्व के न होने से मिल्लत ज़बरदस्त बदहाली का शिकार है। इस वक्त मिल्लत की मिसाल एक यतीम और अनाथ की सी है जो किसी संक्षरक के संरक्षण से वंचित हो। और ''ज़िन्दगी एक अज़ाब है गोया'' की कैफ़ीयत से दो चार हो।

लेकिन प्रश्न यह है कि क़ियादत (नेतृत्व) आये कहां से? क़ियादतें कहीं आकाश से नहीं टपकती। इसी ज़मीन पर पलती-बढ़ती और इसी की मिट्टी-पानी से परवरिश पाती हैं और वह अपने माहौल और अपने समाज का अक़्स और उसका नुमाइन्दा होती है। जिस प्रकार का माहौल होगा और जिस सतेह का समाज होगा। इसी तरह की और इसी स्तर की क़ियादत वहां पर्वान चढ़ेगी। रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शाद है ''जैसे तुम होगे, वैसे ही तुम्हारे अमीर होगे'' वैसे ही तुम्हारी क़ियादत होगी।

क़ियादत और नेतृत्व हमेशा अपनी क़ौम का दर्पण होता है। क़ौम की सतेह और क़ियादत की सतेह में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ नहीं होता। लिहाज़ा मुस्लिम उम्मत के पास अगर कोई दूरअन्देश, निःस्वार्थ और लोकप्रिय क़ियादत

नहीं है, तो उसका अस्ल मसला नहीं है, बल्कि मूल समस्या यह है कि उम्मत गिरावट की उस सतेह पर पहुंच गयी है कि किसी जामेअ सिफात और लोकप्रिय नेतृत्व को जन्म देने से अयोग्य है।

यहां यह बात भी ज़ेह्न में रहे कि क़ौमों का नेतृत्व और क़ियादत किसी एक व्यक्ति विशेष का अमल नहीं होता। उसके लिये प्रशिक्षित और चारित्रक लोगों की एक टीम की आवश्यकता होती है। मान लीजिये कोई बहुत ही बुद्धिमान और बेमिसाल योग्ताओं का लीडर मौजूद है, लेकिन उसके कोई टीम नहीं है जो उसका हाथ-पैर बन सके, तो वह लीडर अपनी सारी विशेषताओं और गैर मामूली योग्यताओं के बावजूद क़ौम की क़ियादत में कभी कामयाब नहीं हो सकती।

हज़रत मूसा अलै० को देखो, उनकी बुलन्द काइदाना सलाहियतों से कौन इन्कार कर सकता है, मगर वह अपनी क़ौम बनी इस्राईल के हाथों मजबूर हो गये, और उन्हें लेकर बैतुल मुकद्दस में दाखिल न हो सके।

उसकी वजह उसके अलावा और कुछ न थी कि उन्हें हज़रत मुहम्मद सल्ल० जैसी टीम न मिल सकी। अगर उन्हें सहाबा-ए-कराम जैसी टीम मिल गयी होती तो वह कभी नाकामी और असफलता का सामना न करते। वह पावन धरती में इस्लाम का झण्डा लहराकर दम लेते।

एक चौथा ख्याल यह है कि आज मिल्लत का सबसे संगीन मसला उसका क़हतुर्रिजाल यानी सज्जन पुरुषों का अभाव है। आज मुस्लिम मिल्लत बुरी तरह क़हतुर्रिजाल का शिकार है। जिस क्षेत्र और मैदान में देखो, योग्य और चरित्रवान लोग नायाब हैं। लाखों और करोड़ों मस्जिदें हैं, जो खुदा से डरने वाले, इल्म वाले और अच्छे क़िरदार वाले इमामों से महरूम हैं और अपनी ख़ामोश ज़बानों से अपनी परेशान हाली की फ़रियाद कर रही हैं–

रह गयी रस्मे अज़ां रूहे बिलाली न रही ।

आज सैकड़ों, हज़ारों और लाखों मदरसे, कालेज और विश्वविद्यालय हैं, जो हमदर्द, सक्रिय और योग्य स्टाफ से खाली और चरित्रवान तथा योग्य प्रबन्धकों से वंचित हैं और उनकी उदास और बेकैफ़ माहौल में इकबाल का यह दर्द भरा शेअ्र गूंज रहा है–

उठा मैं मद्रसा ब खानकाह से ग़मनाक
न ज़िन्दगी, न मुहब्बत, न मारफ़त न निगाह

बेशुमार अन्जुमन जमाअतें और संगठन हैं जो ईमानदार और योग्य, विश्वसनीय और निःस्वार्थ ज़िम्मेदारों, नेताओं और कार्यकर्ताओं से वंचित हैं और वह इक़बाल के इस शेअ्र का चरितार्थ है–

कोई कारवां से टूटा, कोई बदगुमा हरम से
कि अमीरे कारवां में नहीं खूये दिल नवाज़ी

और मुसलमानों की कितनी ही सलतनतें हैं और कितनी ही रियासतें हैं जो चरित्रवान, समझदार, हौसलामंद और खुदा से डरने वाले मंत्रियों और शासकों से वंचित हैं, और वह अपनी सियासी गिरावट, आर्थिक असमानता और सामूहिक बदहाली की ज़बान से फ़रियाद कर रही है।

अरबी.....

''अगर किसी क़ौम का सरदार कौआ हो जाये तो वह उन्हें विनाश के खन्दक में ले जायेगा। इसी से मिलती जुलती तस्वीर इकबाल ने खींची है–

''ज़ाग़ों के तसर्रुफ़ में हैं उक़ाबों के नशेमन''

आज इस्लामी जगत के पास दौलत की कमी नहीं, ज़राये और संसाधनों की कमी नहीं, अस्लहे और बारूद की कमी नहीं, पेट्रोल और यूरेनियम की कमी नहीं, कमी है तो बस ईमानदार, बाअमल और महान व्यक्तियों की, ईमानदार, साहसी और खुद्दार नौजवानों की कमी नहीं बल्कि क़हेत है रूह और आत्मा को लरज़ा देने वालों की क़हेत।

मगर सवाल यह है कि इस क़हेत (अकाल) का कारण क्या है? और इसका इलाज क्या है, यह अकाल दिन-दिन भयानक स्थिति ग्रहण करता जा रहा है, मगर इस पर क़ाबू पाने की कोई राह नहीं निकल रही है। मिल्लते इस्लामिया आज हैरानी और बेचारगी की दोराहे पर खड़ी है और पीछे से ग़ालिब की दर्द भरी आवाज़ कानों में गूंज रही है–

दर्मान्दगी में ग़ालिब कुछ बन पड़े तो जानों
जब उक़दा बेगिरह था, नाखुन गिरह कुशा था

एक पांचवा ख्याल यह है कि आज मिल्लत का सबसे संगीन मसला वह अतिवादी गैर मुस्लिम संगठन हैं जो इस्लाम और मुसलमानों की दुश्मनी में अंधी हो चुकी हैं, और रात दिन इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ ज़हर उगलती रहती हैं। वह अतिवादी संगठन हिन्दुस्तान की हों, या अमरीका की, योरोप की हो या इस्राईल की, वह सारे संगठन इस्लाम के लिये एक भयानक खतरा और मुसलमानों के लिये इस वक़्त का सबसे संगीन मसला है। लिहाज़ा मुसलमानों को उनके मुक़ाबले के लिये पूरी तैयारी करनी चाहिये। और जिन हाथियारों से वह इस्लाम पर हमला करें, उन्हीं हथियारों से मुसलमान भी उन पर हमला करें, या उनके हमलों का जवाब दें। गोया मुसलमानों को अपनी सारी ताक़त और ऊर्जा हिफाज़ती पोजीशन संभालने और हिफाज़ती ताक़त को मज़बूत करने में लगा देनी चाहिये।

यह है आज की मुसलमानों की सोंच। आज का मुस्लिम ज़ेहन क़ौमी मसलों पर इसी अन्दाज़ से सोचता है। यह हालात के दवाब का नतीजा है। और यह बिल्कुल वही सोचने का अन्दाज़ है जो दूसरी क़ौमों के यहां पाया जाता है। दूसरी क़ौमें भी जब इस तरह के हालात से जूझती होती हैं, जिस तरह के हालात से इस वक़्त मुस्लिम उम्मत दो

चार है, तो इस वक़्त इनका सोचने का अन्दाज़ भी यही होता है। उनकी बातें भी इसी ढंग की होती है

शिक्षा में पिछड़ापन, आपस की असहमति, नेतृत्व की कमज़ोरी, रक्षा शक्ति की कमी, काम करने वाले हाथों या सोचने वाले दिमागों का अभाव, यह वह बातें हैं जो हर पराजित क़ौम या हर हारी हुई पार्टी के एजेन्डे में शामिल होती हैं। सवाल यह है कि फिर हमारी और हमारे अन्दाज़े फ़िक्र की विशेषता क्या हुई ?

एक बात और भी क़ाबिले ग़ौर है, उक्त बातों की ओर इशारा किया गया है, वह कमज़ोरी के कारक या बीमारी की हालतें हैं, प्रश्न यह है कि कमज़ोरी के यह अस्बाब दूर कैसे किये जायें? या बीमारी की विभिन्न हालतों से नजात और मुक्ति कैसे हालिस की जाये ?

मुसलमान अगर शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ेपन का शिकार हैं, तो स्पष्ट है उन्हें ही इस पिछड़ेपन की हालत से निकल कर शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिये। मगर इस हालत से वह निकलें कैसे ? क़ौम के नौजवान, जो मायूसी से बिल्कुल बुझ चुके हैं उनके सीनों में जोश और वलवलों की अगीठियां कैसे दहकायी जायें ? रास्ते की जो बेशुमार रुकावटें हैं, उन रुकावटों पर क़ाबू कैसे पाया जाये ?

मान लो, चमत्कारिक रूप से मिल्लत के नौजवानों में आगे बढ़ने और शिक्षा क्षेत्र में तरक़्क़ी करने का वलवला पैदा हो जाता हैं, वक़्त की हुकूमत के दिलों में और

मुसलमानों के लिये कुछ हमदर्दी और दया के ज़ज़्बात पैदा हो जाते हैं, इस तरह उम्मीद के खिलाफ पर उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की सारी सहूलतें हासिल हो जाती है, और फिर मिल्लत में ऐसे नौजवानों की एक खेप तैयार हो जाती है, जो लोग मौजूदा साइंस और आधुनिक टेकनालाजी में महारत हासिल कर लेते हैं, तो क्या ख्याल है? क्या इससे मिल्लत के मसाइल हल हो जायेंगे ? शत प्रतिशत नहीं, क्या दो प्रतिशत भी उसकी समस्यायें हल हो जायेंगी ? बेदीनी के माहौल में, अधर्मी और नास्तिक शिक्षकों और प्रोफेसरों के संरक्षण में मिल्लत के जो अपरिपक्क नौजवान प्रशिक्षित होंगे, वह मिल्लत की समस्यायें हल नहीं करेंगे, बल्कि मिल्लत को नई-नई समस्याओं से दो चार करेंगे।

आज मिल्लत जिन अनगिनत समस्याओं से ग्रस्त है, क्या इनमें से सैंकड़ों समस्यायें मिल्लत के सपूतों की पैदा की हुई नहीं हैं, जिन्होंने यहूदी और ईसाई अध्यापकों और प्रोफ़ेसरों की निगरानी में शिक्षा ग्रहण की है? उन्होंने मूल शिक्षा के साथ-साथ उनसे नास्तिकता, बेदीनी बल्कि इस्लाम दुश्मनी का भी सबक़ लिया है।

फिर वह नौजवान मिल्लत के काम तो क्या आते, वह उलटे मिल्लते इस्लामिया के लिये दर्देसर बन गये। वह मिल्लत के लिये अपने उन यहूदी और ईसाई अध्यापकों से ज़्यादा ख़तरनाक साबित हुये ?

आज जो हुक्मरां और जो सियासी लीडर मिल्लते

इस्लामियां के लिये अज़ाब बने हुये हैं चाहे वह अरब के हों या ग़ैर-अरब के, यह कहां के पढ़े हुये और किन गोदों के पले हुये हैं?

आह! इन बेदीन और धर्म-विरोधी शिक्षण संस्थाओं ने हमारे कितने होनहार मुस्लिम नौजवानों को ठिकाने लगा दिया और मिल्लते इस्लामिया इनसे हाथ धो बैठी है, जबकि वह इनकी खुदादाद सलाहितों की बहुत ज़रूरतमंद थी।

इसी तरह मिल्लत अगर जबरदस्त बिखराव का शिकार है तो इस बिखराव से निकलने का क्या रास्ता होगा ?

यह ख़्वाहिश तो बड़ी नेक ख़्वाहिश है कि सारी मिल्लत एक प्लेटफार्म पर इकट्ठी हो जाये, लेकिन सवाल यह है कि बहुत से ओलमा और रहनुमा और बहुत से वह लीडर और वह नेता जो इसी बिखराव के सहारे जी रहे हैं और बहुत शान के साथ जी रहे हैं, और अगर मिल्लत एक प्लेटफार्म पर इकट्ठा हो जाये तो वह कहीं के नहीं रहेंगे, ''फिरते हैं मीर ख्वार कोई पूछता नहीं'' की दर्दनाक तस्वीर बन जायेंगे। इस तरह के लोगों के लिये एकता और इत्तेहाद के नारे में मिल्लत के लिये क्या कशिश है ? वह क्यों मिल्लत की कामयाबी के लिये अपनी बनी बनाई दुनिया बिगाड़ने लगे ?

और जब यह खूंटे अपनी जगह छोड़ने के लिये तैयार नहीं होंगे तो मिल्लत के यह बेशुमार खेमे एक बड़े

खेमे की शक्ल में क्योंकर तबदील हो सकते हैं ?

यही वजह है कि मिल्लत की एकता और इत्तेहाद के लिये कितने सम्मेलन और समारोह होते हैं, कितने प्रोग्राम बनते हैं, कितने संगठन वजूद में आ जाते हैं मगर सब बेफ़ायदा होते हैं।

हर आने वाली सुबह मिल्लत को एक नये बिखराव का संदेश देती है। और इत्तेहादे मिल्लत की तरफ बढ़ने वाला हर क़दम एक नये विवाद और मतभेद का पड़ाव साबित होता है।

मिल्लत के शुभचिन्तकों की यह बात भी सही है कि मिल्लत एक बेगरज़ और लोकप्रिय नेतृत्व और क़ियादत से महरूम है। लेकिन प्रश्न यह है कि वर्तमान स्थित में, जबकि पूरी मिल्लत छोटी-छोटी टोलियों में बटी हुई है और कोई टोली किसी टोली को स्वीकार करने या उससे हाथ मिलाने को तैयार नहीं हैं, ऐसी स्थित में कोई ऐसी क़ियादत उभर भी कैसे सकती है, जो सबके लिये क़ाबिले क़ुबूल हो ?

किसी अच्छी दूरअंदेश और लोकप्रिय क़ियादत के लिये जहां कुछ उच्च व्यक्तिगत विशेषताओं की ज़रूरत होती है, वहीं लोगों का विश्वास और मिल्लत की तरफ़ से उसकी पुरखुलूस पैरवी और पुरज़ोर समर्थन भी ज़रूरी होती है। जब तक कि ये सारी चीज़ें इकटठा न हों, कोई अच्छी मज़बूत और लोकप्रिय क़ियादत क्यों कर वजूद में आ सकती है?

कहने वालों की यह बात भी अपनी जगह बिलकुल सही है कि मिल्लत क़हतुर्रिजाल यानी अच्छे इन्सानों के अभाव की आज़माइश से जूझ रही है, क़ौमे क़हतुर्रिजाल का शिकार उस वक्त होती हैं जब मर्दुम साज़ी (मानव निर्माण) या शख्सीयत साज़ी (व्यक्तित्व निर्माण) का काम रूक जाता है, जब शिक्षण संस्थायें जो हक़ीक़त में मानव निर्माण के कारखानें होते हैं, वह ईमानदार और निष्ठावान कर्मचारियों और कुशल शिक्षकों से वंचित हो जाती हैं और वह अपाहिज, बेज़मीर, बेहौसला, बेमक़सद और मज़बूर लोगों की राजगद्दियां और पालन-पोषण का केन्द्र बन जाती हैं।

आज अरबी मदरसों और इस्लामी यूनिवर्सिटियों या कालेजों का हाल आमतौर से यही होता है। विद्यार्थी अपनी जवानी और तवानाई के अत्यन्त बहुमूल्य समय यहां गुज़ार देते हैं और जब शिक्षा पूरी करके यहां से विदा होते हैं तो बिल्कुल कोरे और बेसूद होते हैं, न उनके पास कोई इल्म की पूंजी होती है न अमल का कोई जज़्बा।

विद्यार्थियों की महरूमी की यह कैफ़ीयत क्यों होती है? यह कैफीयत उस वजह से होती है कि जो लोग इन मदरसों में तालीम व तर्बियत (शिक्षा-दीक्षा) के ज़िम्मेदार होते हैं, इल्म और अख़लाक़ के लिहाज़ से वह खुद दरिद्रता का शिकार होते हैं। बकौल शायरे मश्रिक़-

''न ज़िन्दगी न मुहब्बत न मारफ़त न निगाह''

आह ! जब अफ़राद साज़ी (मानव निर्माण) के कारखानों का

यह हाल हो, तो अफ़राद कहां से आयें? आज अगर मिल्लत क़हतुर्रिजाल (अच्छे लोगों का अभाव) का शिकार है तो उसमें आश्चर्य की क्या बात है?

कोई भू-भाग चाहे वह कितना ही उपजाऊ क्यों न हो, अगर वह किसी ऐसे व्यक्ति के हाथों लग जाये, जो अनाड़ी भी हो, काहिल भी हो, बे ज़ौक और बेहौसला भी हो, तो वह भू-भाग ज़ायकेदार फलों का बाग होगा, या कांटों भरा झाड़ियों का जंगल।

आज हमारे शैक्षिक संस्थानों की मौजूदा हालत भी कुछ ऐसी ही है। ऐसी स्थिति में मिल्लत को योग्य और चरित्रवान लोग मिलें तो कहां से मिलें।

मिल्लत के लिये यह एक कठिन आज़माइश है। हमारे इन शिक्षण संस्थाओं की बदहाली दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही है, स्थिति यह है कि-

''मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की''

कहने वाले यह बात भी कहते हैं कि आज की अतिवादी ग़ैर-मुस्लिम संगठन और यहूदी एजेन्सियां इस्लाम के लिये एक कड़ी चुनौती और मुसलमानों के लिये एक भयानक ख़तरा हैं। लिहाज़ा हमें सबसे पहले इस खतरे से निपटना और इस चुनौती का मुक़ाबला करना चाहिये, और जिन हथियारों से वह हम पर हमलावर हों, उन्हीं हथियारों से उनका जवाब देना चाहिये।

मगर सवाल यह है कि इस तरह की अतिवादी

संगठन और ख़तरनाक ऐजेन्सियां कब नहीं रही हैं? इतिहास का वह कौन सा दौर गुज़रा है, जब शैतानी शक्तियों ने इस्लाम पर दबाव डालने और इस्लामी शक्तियों को मिटा देने की नापाक कोशिशें न की हों।

''सतीज़ाकर रहा है अज़ल से ता इमरोज़
चेराग़े मुस्तफ़वी से शरारे बू लहबी

यह आज का कोई नया मसला या समस्या नहीं है। अहले हक़ (सत्यवादियों) से बातिल (असत्यवादियों) का टकराव सदा से चला आ रहा है। लिहाज़ा इस स्थिति से परेशान और मायूस होने की ज़रूरत नहीं।

हम इन खतरों को ज़रूर अपने सामने रखें और हिकमत और होशियारी के साथ उनका मुक़ाबला भी करें। मगर ऐसा न हो कि अपनी सारी योग्यतायें और क्षमतायें इन संगठनों के साथ टकराव में लगा दें और हमारा जो अस्ल काम है, उस काम को पीछे छोड़ दें। हमारा जो अस्ल मिशन है उस मिशन से ग़ाफ़िल हो जायें।

हमारा अस्ल काम क्या है ? अल्लाह की सम्पूर्ण बन्दगी और उसके भेजे हुये दीन का सच्चा प्रतिनिधित्व।

इस दुनिया में हमारा मिशन क्या है? इस ज़मीन पर हम अल्लाह के प्रतिनिधि और खलीफ़ा हैं। हमारा फ़र्ज़ है कि हमारा जीना और हमारा मरना अल्लाह के लिये हो। हमारी सारी योग्यतायें और सारी क्षमतायें अल्लाह के दीन के लिये समर्पित हों। हमारी सारी इच्छायें और

तमन्नायें उसकी पसन्द के अनुसार हो।

इस ज़िन्दगी में हमारी सबसे बड़ी तमन्ना यह हो कि अक़ामतेदीन की कोशिशों में हम किसी से पीछे न रहें। हमारा हर पल अपने रब और पालनहार की इताअत और आज्ञापालन में व्यतीत हो और हमारा हर क़दम इस्लाम के प्रचार-प्रसार और उसको प्रभावी बनाने की राह में उठे। हमारे होठ खुले तो अल्लाह के ज़िक्र के लिये, हमारी ज़बाने खुलें तो अल्लाह की बात और उसके संदेश के लिये

तू है जब प्याम उसका फिर प्याम क्या तेरा
तू है जब सदा उसकी आप बेसदा हो जा

इस पद और मन्सब की सच्ची समझ और उस मक़सद से दिली लगाव, यही हमारी सम्मान और सफलता का रहस्य है और हमारी शक्तियों का स्रोत है और यही हमारी सारी समस्याओं का हल और यही हमारी तमाम परेशानियों का इलाज है।

आज हमारा बुनियादी मसला, हमारा तालीमी पिछड़ापन नहीं है, बल्कि हमारा तालीमी पिछड़ापन नतीजा है इस बात का कि इस दुनिया में अपनी अस्ल हैसीयत को हमने भुला दिया। अपनी अस्ल हैसीयत को समझने का ही नतीजा था कि सहाब-ए-कराम ने अपने इल्मी मापदण्ड को इतना बुलन्द किया कि देखते-देखते वह बज़्मे इल्म (ज्ञान-सभा) के अध्यक्ष बन गये। फिर उन्होंने गली-गली इल्म के चर्चे किये और अपनी हुकूमत के एक-एक घर को

इल्म का मर्कज़ बना दिया ।

कोई भी मुस्लिम व्यक्ति या कोई भी मुस्लिम क़ौम जिसे अपने मन्सब और पद का शऊर हो, उसके यहां शैक्षिक पिछड़ेपन का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, लेकिन अगर इस मन्सब का शऊर न हो तो कोई भी नुस्खा और कोई भी उपाय उसे पिछड़ेपन की स्थिति से नहीं निकाल सकता, यहां तक कि अगर वह डाक्टर या प्रोफ़ेसर या मौलाना या अल्लामा भी हो जाये, तो वह जाहिल ही रहेगा और ऐसे जाहिलों की इस दौर में कमी नहीं।

कोई भी इल्म चाहे वह सीधे अल्लाह की किताब या उसके दीन का इल्म हो, या दूसरे भौतिक और अनुभवी ज्ञान जो इस दुनिया के ख़ालिक़ की रचनाओं पर ग़ौर व फिक्र से हासिल किये गये हों, वह सब अल्लाह के करीब करने वाले, अल्लाह के आगे झुकने वाले और अल्लाह की इताअत और आज्ञापालन के लिये बेचैन कर देने वाले होते हें, बशर्ते कि वह दिल व दिमाग की पवित्रता और निगाहों की बुलन्दी के साथ हासिल किये गये हों।

यही स्वस्थ और सूदमंद इल्म की पहचान है। और इसी इल्म को हासिल करके कोई क़ौम शैक्षिक पिछड़ेपन की हालत से निकल सकती है। अगर दिल व दिमाग़ की पवित्रता और निःस्वार्थता न हो, तो इल्म हासिल करने की हर कोशिश को इल्म से दूर और जिहालत और अज्ञानता से करीब करती है। यही हक़ीक़त है जो इस फ़रमान इलाही

में बयान की गयी है।

''अलओलमा यखशल्लाहु मिन इबादिहिल ओलमा''

और जब मुस्लिम क़ौम को अपने इस पद और मन्सब का शऊर हो जाये, तो फिर इल्म हासिल करने की कोशिश से उसे कोई चीज़ नहीं रोक सकती। संसाधनों की कमी या अभाव उसके लिये कोई मतलब नहीं रखते। वह हर हाल में अपनी इल्मी प्यास बुझायेगी और इल्म के स्रोतों से जलमग्न होकर दम लेगी।

उसकी ताज़ा मिसाल वह मज़लूम और पीड़ित फ़िलिस्तीनी क़ैदी हैं, जिन्होंने अधिकृत फ़िलिस्तीन के यहूदी जेलखानों की वीरान और भयानक काल कोठरियों को अपनी इल्मी और फिक्री तरक़्क़ी के लिये इस्तेमाल करके, उनको न सिर्फ़ मदरसों और विश्वविद्यालयों के क्लास रूम में बदल डाला, बल्कि देश और विदेश के विश्वविद्यालयों से अच्छे नम्बरों के साथ महत्वपूर्ण स्थान भी हासिल कीं।

उन्होंने जेल की बदबू और भयानक काल कोठरियों में रहते हुये और इसराईल के खूंखार जल्लादों की भयानक यातनाओं को सहन करते हुये बी.ए., एम.ए. और पी–एच.डी की सर्वोच्च डिग्री प्राप्त कीं। इस पूरी मिल्लत के अन्दर तबीअत की बुलन्दी, दिल की विशालता, नफ़्स की बेगरज़ी, दिलसोज़ी, दर्दमन्दी, त्याग एवं प्रेम, बेनियाज़ी और सन्तुष्टि, यहां तक कि वह सारी खूबियां पैदा हो जाती हैं जो उसे शीशापिलाई हुयी दीवार बना देती हैं।

इस वक्त उसके अन्दर स्वार्थ, नफ़्स परस्ती, भौतिकता, खुदा बेज़ारी, आखिरत फ़रामोशी की बीमारियां नहीं होती जो बदक़िस्मती से आज मिल्लते इस्लामियां के अन्दर घुस आई हैं, और धीरे-धीरे उसके शरीर को खोखला और उसकी सामूहिकता को पारा-पारा कर रही है।

आज यह उम्मत अगर एक प्लेटफार्म पर जमा हो सकती है तो बस इसी तौर से कि उसके अन्दर दोबारा अपने मन्सब का शऊर पैदा हो जाये, वह इस शऊर से इस तरह परिपूर्ण हो जाये जिस तरह मदीने के औस व खज़रज परिपूर्ण हो गये थे, और फिर उसी की बर्कत से सैकड़ों वर्ष से चली आ रही दुश्मनियों और खूंरेज जंगों के बाद आपस में शोर व शऊर और एक जान दो जिस्म बन गये थे।

यही वह गुणकारी नुस्खा है जो फटे हुये दिलों को जोड़ सकता है, यही वह नुस्खा है जो बिखरे हुये नीतियों को इकटठा कर सकता है, यही वह नुस्खये कीमिया है जो लालची तबीअतों में सन्तुष्टि पैदा कर सकता है और यही वह नुस्खये कीमिया है जो बेज़मीर इन्सानों को ज़मीर की दौलत से मालामाल कर सकता है।

अल्लाह तआला का इर्शाद है---गोया

अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ कर ही यह बिखरी हुई मिल्लत दुबारा संगठित हो सकती है वरना उसे इख्तिलाफ़ व इन्तिशार की हालत से निकालने वाली कोई दूसरी चीज़

नहीं है और अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ना और हर हाल में पकड़े रहना कोई आसान काम नहीं है। यह काम बस वही फ़र्द या वही गिरोह कर सकता है जिसे अपने मनसब और मिशन का सही शऊर हो। और उस शऊर से पूरी तरह सरशार हो, फिर उस शऊर की बुनियाद पर अगर मिल्लत दोबारा संगठित हो जाती है। छोटी-छोटी तमाम टोलियां अपने आपको मिलाकर मिल्लते वाहिदा की सूरत इख्तियार कर लेती है तो इस स्थिति में पूरी मिल्लत एक ही नेतृत्व और क़ियादत के नीचे इकटठा हो जायेगी और यह घड़ी शैतान के लिये बड़ी कठिन घड़ी होगी। क्योंकि शैतान को किसी बात से इतना दुख नही होता जितना दुख इस बात से होता है कि उम्मते मुस्लिमा केवल अल्लाह की खातिर अल्लाह के नाम पर आपस में संगठित हो जाये।

इस शैक्षिक प्रयास का अध्ययन व समीक्षा एक फ़िलिस्तीनी विद्वान अ० नासिर फ़र्दाना ने, जो खुद इसराइल के कैदी रह चुके हैं और इस वक्त वह फ़िलिस्तीनी क़ैदियों की ''विज़ारते मुहकमा अदाद व शुमार'' के मुदीर हैं। इन्होंने पेश किया (देखें शहरोज़ा दावत 25 नवम्बर) यह मन्सब के उसी शऊर की देन है, जिसका अभी हमने ज़िक्र किया है, यह शऊर और समझ अगर हिन्दुस्तान की मुस्लिम क़ौम में जाग जाये, तो क्या इस मिल्लत के अन्दर कोई एक भी जाहिल नज़र आ सकता है ? और क्या इसके

बाद किसी को यह कहने की हिम्मत हो सकती है कि हिन्दुस्तानी मुसलमान अफ़सोसनाक हद तक शैक्षिक पिछड़ेपन का शिकार है।

फिर अगर मिल्लत के अन्दर मन्सब का यह शऊर जाग जाये, तो क्या उसके यहां क़हतुर्रिजाल की कैफीयत पैदा हो सकती है? इस शऊर के अन्दर तो इतनी ताक़त होती है कि किसी मुर्दा कौम के अन्दर भी यह शऊर जाग जाये तो उसकी रगों में ज़िन्दगी की बिजलियां दौड़ने लगती हैं, उसका पतझड़ बसन्त में और अन्धेरी रातें रौशन दिनों में बदल जाते हैं।

अरब क़ौम को देखों, क़ुरआन नाज़िल होने से पहले उसकी क्या हालत थी ? ज्ञान और सभ्यता की दुनिया में उसका क्या स्थान था ? मगर क़ुरआन ने आकर जब उसे उसके बुलन्द मन्सब का शऊर प्रदान किया तो उसे अन्दर से सलाहियतों और योग्यताओं के सोते फूटने लगे। अकलमंदी और ज़िहानत के एक से एक नमूने सामने आने लगे। और देखते देखते वह क़ौम कीमती और अज़ीम लोगों से मालामाल हो गयी। बल्कि यूं कहो कि वह पूरी क़ौम ही मिट्टी से कुन्दन बन गयी।

और फिर ज़माने ने देखा कि वह क़ौम जो हमेशा हुकूमतों और हुक्मरानों से दूर रही, उसके हाथों में जब दुनिया की बागडोर आयी तो, उसे व्यवस्था को चलाने वाले हाथों और पालीसी बनाने वाले विभागों की कभी कमी नहीं

महसूस हुई। और उस ज़मीन पर उसने एक ऐसी हुकूमत की बुनियाद डाली, जो न्याय और इन्साफ, सुख व शान्ति के लिहाज़ से बेमिसाल थी। आस्मान की ऑखों ने ऐसा शान्तिपूर्ण सल्तनत न उससे पहले कभी देखी, न उसके बाद कभी देखी।

इसी तरह मिल्लत के अन्दर मन्सब का शऊर जाग जाये तो फिर उसके किसी फर्द की कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती। उसका हर फर्द एक अनमोल हीरा बन जाता है इस शऊर की बर्कत से फिर अगर मिल्लते इस्लामियां अपने हक़ीक़ी मन्सब और अपनी अस्ल हैसीयत को पहचान लेती है और उस मन्सब और उस हैसीयत के तकाज़े पूरे करने के लिये तैयार हो जती है। वह अपने रब की मुकम्मल ग़ुलामी और अपने इस्लाम की सच्ची नुमाइन्दगी को अपना मिशन क़रार दे लती है, तो फिर सारे आलम की शैतानी ताक़तें मिलकर भी उसका बाल बींका नहीं कर सकती।

आज जिन इस्लाम दुश्मन ताक़तों और जिन मानवता विरोधी संगठनों और ऐजेन्सियों से मिल्लते इस्लामियां को ख़तरा का सामना है और जिन से दर्दमन्द मुस्लिम परेशान है, उनका अस्ल इलाज यही है।

संक्षेप में यह है कि उम्मते इस्लामियां आज जिन विभिन्न समस्याओं और जिन परेशानियों का शिकार है उनका उसके अलावा और कोई हल नहीं कि वह ज़ेहनी

और अमली तौर पर नव निर्माण के लिये तैयार हो जायें, वह इस दुनिया में अपने अस्ल मन्सब और अपनी अस्ल हैसीयत को पहचाने और उस मन्सब के तकाज़ों और इस हैसीयत की ज़िम्मेदारियों को उठाने का गम्भीर फ़ैसला करें और उसके लिहाज़ से अपने अन्दर बुनियादी तबदीली लायें।

अल्लाह तआला हमारी कोताहियों को माफ़ फरमायें और हमें सही अन्दाज़ से सोचने और सही रास्तों पर संघर्ष करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें ।आमीन..